सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन नं. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -19 | 05 जुलाई 2025,शनिवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

भीलवाड़ा में कार टक्कर विवाद में युवक की हत्या:जहाजपुर में तनाव के चलते ताजिया निकालने पर रोक, परिवार धरने पर

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा में युवक की हत्या के मामले में विरोध प्रदर्शन जारी है। परिवार ने एक करोड़ के मुआवजे के साथ आरोपियों के घर पर बुलडोजर चलाने की मांग की है।

शनिवार सुबह से जहाजपुर के सरकारी हॉस्पिटल के बाहर परिवार प्रदर्शन कर रहा है। वहीं, कस्बे में तनाव के चलते प्रशासन ने 5 और 6 जुलाई को मोहर्रम पर निकलने वाले ताजिया पर रोक लगा दी है।

दरअसल, शुक्रवार शाम को जहाजपुर के तकिया मस्जिद इलाके में युवक के साथ मारपीट हुई थी। इस दौरान उसकी मौत हो गई थी। पुलिस ने बताया कि पूरा विवाद कार के ठेले से टकराने के कारण हुआ था।

हत्या के विरोध में आज जहाजपुर कस्बा भी बंद है। मामले में अब तक 16 नामजद व 20 अन्य लोगों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया है। वहीं, 10 थानों का जाप्ता भी मौके पर तैनात है।

सबसे पहले जानिए- क्या है पूरा मामला

पुलिस के अनुसार टोंक के छावणी के रहने वाले वाले चार युवक सीताराम, सिकंदर, दिलखुश और दीपक कार से जहाजपुर आए थे। ड्राइविंग करने वाले सिकंदर कीर ने बताया कि वे सभी उसकी बहन के यहां एक कार्यक्रम में आए थे।

मुख्य बाजार से निकलने के दौरान उनकी कार एक ठेले से टकरा गई। इसके बाद ठेले वाले के साथ उनका विवाद हो गया। इसी दौरान वहां करीब 20 लोग जमा हो गए और मारपीट करने लगे।

उन्होंने सीताराम को बाहर खींचकर सड़क पर गिरा दिया। हमले में सीताराम कीर (25) की मौत हो गई। घटना शुक्रवार देर शाम 7.30 बजे की है।

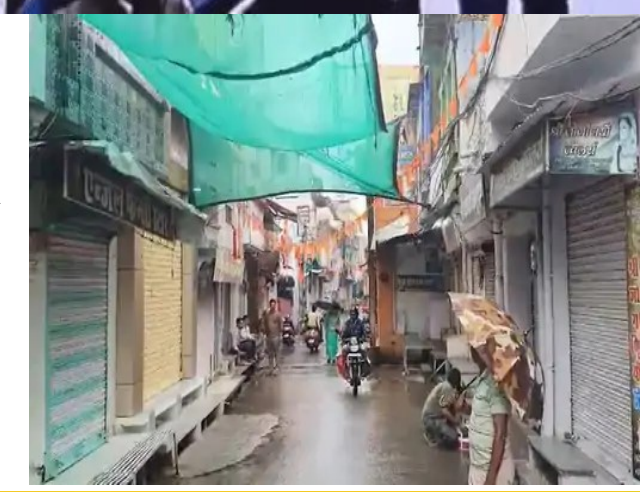

तस्करों को गाड़ियां उपलब्ध कराने वाला हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

अवैध मादक पदार्थों की तस्करी और तस्करों को गाड़ियां उपलब्ध कराने वाले हिस्ट्रीशीटर को भीलवाड़ा पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी 2 साल से फरार चल रहा था। उस पर 15 हजार का इनाम रखा गया था। नागौर के हिस्ट्रीशीटर को भीलवाड़ा की डीएसटी और पुर थाना पुलिस ने गिरफ्तार किया। आरोपी पर पॉक्सो समेत 6 केस दर्ज हैं। आरोपी युवक नागौर थाने का हिस्ट्रीशीटर है।

एसपी धर्मेंद्र सिंह ने बताया- 8 फरवरी 2023 को पुर थाने पर सूचना मिली कि एनएच-48 पर ग्रिड के पास पिकअप खड़ी है। तत्कालीन थानाधिकारी राजेंद्र कुमार मौके पर पहुंचे। पिकअप में 215 किलो अफीम डोडा- चूरा मिला। पिकअप के रजिस्ट्रेशन नम्बर फर्जी थे। इंजन नम्बर व चेसिस नम्बर का मिलान किया तो वाहन चोरी का होना सामने आया। जिसकी एफआईआर पुलिस थाना चौमूं में दर्ज है।

मांडल विधायक भडाणा के जन्म दिवस पर पहला नवाचार, तीन हजार लोगों को अयोध्या रामलला के कराये दर्शन, बधाईयो का तांता

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजेन्द्र खटीक

भीलवाडा! मांडल भाजपा विधायक उदयलाल भडाणा ने अपने 5 जुलाई जन्म दिनांक दिवस पर एक अनोखा नवाचार किया है। जिसकी काफी प्रशंसा , चर्चा है। भीलवाड़ा जिले की मांडल विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक उदयलाल भडाणा अपने जन्म दिनांक दिवस 5 जुलाई को भीलवाडा से अयोध्या प्रसिद्ध धार्मिक नगरी प्रभू श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या में सरयू नदी स्नान , श्रीराम एवं हनुमान गढ़ी मंदिर में भगवान के दर्शन कराने हेतु अपने खर्चे से 26 डिब्बों की एक रेल बूक करा नई मिशाल पेश की है। पहलीबार पार्टी जन एंव समर्थको मे खासा उत्साह है।भीलवाड़ा जिले के भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ सहित जिला पदाधिकारियों, अपने निर्वाचन क्षेत्र के भाजपा मण्डल अध्यक्ष, पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को लेकर आज शनिवार सुबह प्रभू श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या पहुंचे हैं।अयोध्या से मोबाइल खास बातचीत में भाजपा विधायक उदयलाल भडाणा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व एवं मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा कुशल के नेतृत्व में मैरे विधानसभा क्षेत्र ओर राजस्थान ,देश में खुशहाली, समृध्दि, उन्नति की प्रार्थना हेतु भीलवाड़ा जिले एवं मांडल विधानसभा क्षेत्र के भाजपा पदाधिकारियों कार्यकर्ताओं को मैं आज अपने जन्म दिनांक दिवस पर प्रभू श्रीराम जन्मभूमि अयोध्या लेकर आया हूं। विधायक उदयलाल भडाणा ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं प्रदेश में भाजपा शासन से देश प्रदेश में फिर से राम राज्य स्थापित होगा, सब का विकास होगा।भाजपा विधायक उदयलाल भडाणा के साथ आज अयोध्या पहुंचे भीलवाड़ा भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ ने खास बातचीत में कहा, भाजपा विधायक उदयलाल भडाणा का अपने जन्म दिनांक दिवस पर भक्ति,देश प्रदेश की उन्नति की शुभकामनाएं से किया यह भक्ति पूर्ण अनौखा नवाचार से लोगों को केवल अपने वैभव प्रदर्शन , तामझाम से जन्म दिन माने के बदले अपने साथी, सहयोग के साथ धार्मिक नगरी में मनाने की सीख मिलेगी। भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ ने बताया, भाजपा संगठन पदाधिकारियों, कार्यकत्ताओं को अपने साथ प्रसिद्ध धार्मिक नगरी अयोध्या भगवान के दर्शन, शुभकामना को लेकर आने से विधायक उदयलाल भडाणा का साधूवाद हैं उनके, इस कार्यक्रम की प्रसंशा हो रही है।

सौजन्य - द मूवमेंट ऑफ इंडिया फाउण्डेशन

सम्पादकीय

विश्व शांति के लिए भी खतरा है पाकिस्तान

पहलगाम के आतंकी हमले ने द्विपक्षीय समीकरण ही नहीं, बल्कि समूचे दक्षिण एशिया में संबंधों के तानेबाने को प्रभावित किया है। इस हमले ने आतंक की नीति को जारी रखने वाली पाकिस्तानी मंशा को प्रकट किया था। पर्यटकों से उनकी मजहबी पहचान पूछकर की गई हत्याओं को लश्कर के पिट्ठू संगठन द रेजिस्टेंस फ्रंट यानी टीआरएफ ने अंजाम दिया। इसे केवल एक नरसंहार के रूप में न देखा जाए। यह भू-राजनीतिक उकसावे की एक सुनियोजित कार्रवाई थी। इसने जहां आतंक को पालने-पोसने वाले पाकिस्तान के कलंकित इतिहास को दोहराया, वहीं इसके पीछे की एक मंशा जम्मू-कश्मीर में सुरक्षा ढांचे को अस्थिर करने की भी थी। वैश्विक निगरानी और अंतरराष्ट्रीय दबाव के बावजूद पाकिस्तान ने अपनी जमीन पर संचालित आतंकी ढांचे को समाप्त नहीं किया है। पहलगाम हमला भी उसी पुराने ढर्रे पर किया गया, जहां सेना-आइएसआइ की आतंकी करतूत से इस्लामाबाद ने आदतन किनारा कर लिया। इसमें किसी को कोई संदेह नहीं हो सकता कि पाकिस्तान के शीर्ष नेतृत्व की हरी झंडी के बिना ऐसे किसी हमले को अंजाम दिया गया होगा। पहलगाम हमले के बाद भारत ने आर्थिक, कूटनीतिक और सामरिक मोर्चों पर बहुत कारगर कदम उठाए और पाकिस्तान को करारा जवाब दिया। दूसरी ओर, पाकिस्तान लकीर पीटने वाले ढर्रे पर चलते हुए बस शेखी बघारता रहा। भारत ने जहां सिंधु जल समझौते को ठंडे बस्ते में डालकर पाकिस्तान और उसकी आर्थिकी की कमर तोड़ने वाला दांव चला, वहीं पाकिस्तान शिमला समझौते से पीछे हटने का निरर्थक राग अलापता रहा। कश्मीर में दशकों की अस्थिरता से उबरते हुए पटरी पर आ रही पर्यटन गतिविधियां आतंकी हमले के बाद फिर से अनिश्चितता के भंवर में फंस गई हैं। हालांकि इसका आर्थिक खामियाजा जम्मू-कश्मीर से परे समूचे दक्षिण एशिया को भुगतना पड़ रहा है। इस पृष्ठभूमि में भारत-पाकिस्तान, दोनों ने व्यापार, निवेश और वीजा आदि के मोर्चे पर जो कदम उठाए हैं, उससे क्षेत्रीय सहयोग के साथ ही आर्थिक-व्यापारिक गतिविधियों पर भी ग्रहण लगा है। इस तरह एक देश की आतंक समर्थक नीतियों की कीमत पूरे क्षेत्र को अपनी शांति एवं समृद्धि गंवाने के रूप में चुकानी पड़ रही है। यहां तक कि पाकिस्तान के इस रवैये का दंश वहां की जनता को भी भुगतना पड़ रहा है। उसे फर्जी राष्ट्रवाद की घुट्टी पिलाई जा रही है। भले ही पाकिस्तान खुद को आतंक से पीड़ित दिखाने का प्रयास करता रहे, लेकिन उसकी पहचान आतंक से निपटने में शिथिलता दिखाने वाले देश की ही है। करीब ढाई माह पुराने पहलगाम हमले ने आतंकी गतिविधियों के मामले में पाकिस्तान को लेकर अंतरराष्ट्रीय चिंताओं को नए सिरे से उभारने का काम किया है। पूर्व में पाकिस्तान को ग्रे लिस्ट में रखने वाली एफएटीएफ जैसी संस्था के समक्ष भी पाकिस्तान पर अंकुश लगाने का दबाव बढ़ेगा। इससे पाकिस्तान की छवि और खराब होगी। आर्थिक निवेश और विकास को लेकर उसकी उम्मीदों को पलीता लगेगा। पहलगाम हमला पाकिस्तान के आतंकी चरित्र में एक खतरनाक बदलाव का भी परिचायक है।

प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य

आवश्यकता

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया को

को राजस्थान के प्रत्येक जिले व तहसील से ब्यूरो व संवाददाताओं की आवश्यकता है

इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें

- 9694957624 dayaramdivya5@gmail.com

themovementofindia2012@gmail.com

शाहपुरा में 6 जुलाई को राम कोठी में होगा सहजयोग शिविर

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजेन्द्र खटीक शाहपुरा!

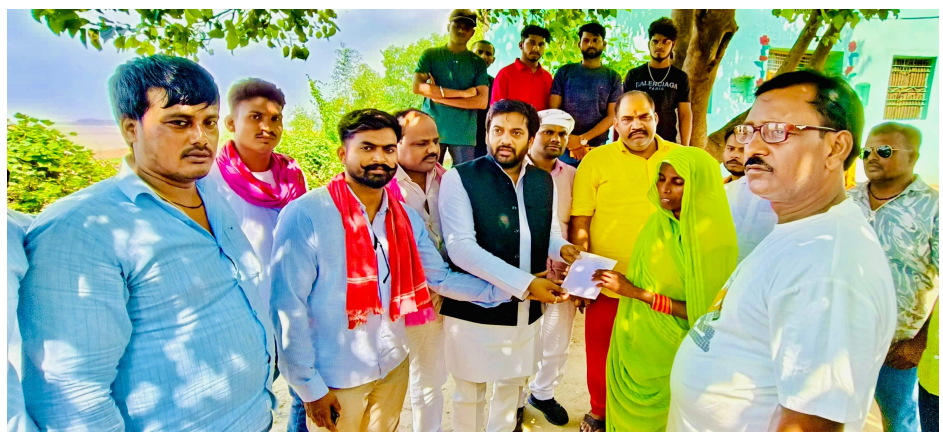

शाहपुरा – शाहपुरा के रामद्वारा रामस्नेही सम्प्रदाय पीठ रामकोठी परिसर में 6 जुलाई रविवार को सहजयोग आत्म साक्षात्कार का कार्यक्रम किया जा रहा है।कार्यक्रम संयोजक पुर्व पालिका अध्यक्ष अनिल चोधरी ने बताया कि श्री राम महिमा व सामुहिक हनुमान चालीसा के साथ होने वाले इस कार्यक्रम के दौरान सहजयोग से होने वाले लाभ उत्तम स्वास्थ्य तनाव रहित जीवन दुव्यसनो से मुक्ति बच्चो में श्रेष्ठ संस्कार आंनद में गृहस्थ जीवन एकाग्रता व स्मरण शक्ति के नुस्खे भी बताए जायेगे।पूर्णतया निःशुल्क होने वाले इस आयोजन में शहर वासियो के भाग लेने की अपील की गई है।उल्लेखनीय है कि माता जी निर्मला देवी के सानिध्य में चलने वाले सहजयोग अभियान के तहत शाहपुरा में यह कार्यक्रम किया जा रहा है।

मिर्जापुर आकाशीय बिजली घटना चुनार ग्राम भौंरही पीड़ित मन्नू सोनकर

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजेन्द्र खटीक शाहपुरा!

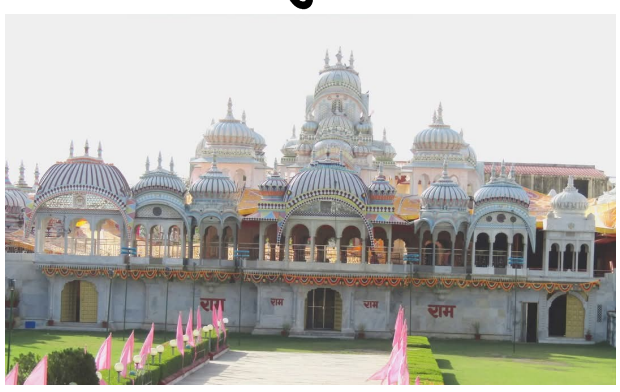

मिर्जापुर! ग्राम भौंरही चुनार मिर्ज़ापुर में मुन्नू सोनकर और करिया साहनी के लगभग दो दर्जन से ज्यादा जानवरों (बकरी) की आकाशीय बिजली गिरने से मृत्यु की सूचना पाकर विगत कुछ दिन पहले चुनार में पीड़ित परिवार से फोन पर वार्ता कर घटना पर टेलीफोन से वार्ता हुई जिसमें जल्द आने और सरकारी आपदा प्रबंधन से आर्थिक मदद का भरोसा दिलाया था उसी क्रम में कल चुनार में संगठन और पार्टी पदाधिकारियों संग चुनार पहुंच कर पीड़ित परिवार की आर्थिक मदद किया गया और अधिकारियों से वार्ता कर जल्द से जल्द सरकारी आपदा राहत कोष से सहायता हेतु वार्ता कर एक हफ्ते में मदद पर कार्यवाही कर मदद की बात रखी द्य मेरे (सत्य प्रकाश सोनकर-प्रमुख महासचिव आंबेडकर वाहिनी) साथ,पूर्व पार्षद वरुण सिंह,बाबा साहब अंबेडकर वाहिनी के राष्ट्रीय सचिव उमेश सोनकर और सचिव रामबाबू सोनकर,पार्षद रामकुमार यादव , संजय यादव , आशीष राय , सचिन यादव ,एड0 विनोद सोनकर सहित दर्जनों समाजवादियों ने पहुंच कर जानकारी लिया और दोनों परिवारों को अपने पास से पांच-पांच हजार की आर्थिक मदद किया और अधिकारियों से वार्ता कर आपदा राहत कोष से मदद करने हेतु वार्ता कर जल्द से जल्द आर्थिक सरकारी मदद हेतु भरोसा दिया साथ ही अधिकारियों द्वारा एक हफ्ते के अंदर प्रति बकरी चार हजार रुपया देने की बात बताई गई । स्थानीय नेताओं में रंजीत सोनकर नगर उपाध्यक्ष , खटाई सोनकर पूर्व प्रधान , सोनू सोनकर बूथ अध्यक्ष , योगेंद्र आर्या , अवधेश सोनकर , संदीप सोनकर, अभिषेक , बहादुर लाल मौजूद रहे।

भागवत कथा में श्री कृष्णा बाल लीला का वर्णन सुन मंत्र मुक्त हुए श्रद्धालु, सजाई गोवर्धन पर्वत की झांकी

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाडा। (पंकज पोरवाल)

श्रीमद् भागवत गंगा के समान है। भागवत को संतों ने गंगा का रूप दिया है। संतो के श्रीमुख से निकली वाणी गंगा कहलाती है। एक भागीरथी गंगा है और एक सत्संग रूपी भागवत गंगा है। इन दोनों में सबसे तेज प्रवाह भागवत गंगा का है। हरिद्वार में जो भागीरथी गंगा बह रही है वह तन को पवित्र करती है। श्रीमद् भागवत गंगा मन को पवित्र करती है और गोविंद की प्राप्ति होती है। इसलिए सबसे ज्यादा महत्व भागवत गंगा का है। उक्त अमृत वचन सूर्य महल मे मंगरोप वाले काबरा परिवार के द्वारा आयोजित श्रीमद् भागवत कथा के दौरान कथावाचक संत अर्जुन राम के द्वारा व्यक्त किये गये। श्रीमद् भागवत कथा के छठे दिन श्रद्धालुओं ने श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का रसपान किया। संत अर्जुन राम ने श्री कृष्ण बाललीला, माखन चोरी लीला, वेणु गीत गोवर्धन पूजा आदि प्रसंगो का वर्णन किया। कथा के दौरान छप्पन भोग व गोवर्धन पर्वत की झांकी सजाई गई। झांकियों को देखकर श्रद्धालु भाव विभोर हो गए। संतश्री ने कहा कि भगवान की लीलाएं मानव जीवन के लिए प्रेरणादायक है। भगवान कृष्ण ने बचपन में अनेक लीलाएं की। आयोजन कर्ता कैलाश चन्द्र काबरा मंगरोप ने बताया की कथा के छठे दिन महारास, गोपी गीत प्रसंग, कंस मर्दन, रूकमणी मंगल होगा। कथा के साथ-साथ बीच में सुमधुर भजनों से भक्तों को जोड़ने में मजबूर कर देते है। साथ ही भागवत कथा को सुनने के लिए शहर के साथ जिले के आसपास के गांवों व अन्य जिलो के लोग पहुंच रहे हैं। कथा के अंत में संतश्री को भीलवाडा जिला माहेश्वरी सभा अध्यक्ष अशोक बाहेती, उपाध्यक्ष रामकिशन सोनी, अर्थमंत्री सुशील मरोटिया, लायंस क्लब टेक्सटाइल सिटी से अशोक शर्मा, अनिल गग्गड, गोपाल अजमेरा, चांदमल सोमानी, रमेश काकरवाल, सुनील बॉलर, धर्मेंद्र गंगवाल, विजय कुमार डाड, सत्यनारायण मंत्री, प्रहलाद अग्रवाल, प्रमोद डाड, जितेंद्र सालेचा, अशोक चेचानी, प्रकाश नुवाल, शंकर लाल सोमानी, जमनालाल सोमानी, आशुतोष शर्मा गोविन्द लाल लढ़ा, रामचन्द्र लढ़ा, लादुलाल, रतनलाल सोमानी, मिश्री लाल बाहेती, ओमप्रकाश सोमाणी द्वारा संतश्री अर्जुनराम जी को माला अर्पण की गई इसी दौरान संत श्री ने आगुतक अतिथियों एवं मेहमानों को दुपट्टा पहना कर आशीर्वाद प्रदान किया। कथा के समापन पर संतश्री सहित सभी भक्तों ने आरती में भाग लिया। उसके बाद प्रसाद का वितरण किया गया। कथा 5 जूलाई तक प्रतिदिन प्रातः 9 से दोपहर 1 बजे तक चलेगी।

अमेरिका की नई तलवार!

यह साफ कर दिया जाना चाहिए कि भारत पर नए टैरिफ लगाए गए, तो यह बीटीए का उल्लंघन होगा। दो टूक ट्रंप प्रशासन को बताया जाना चाहिए कि उन स्थितियों में बीटीए पर पालन करने के लिए भारत विवश नहीं होगा। अमेरिका में रिपब्लिकन सीनेटर लिंडसे ग्राहम ने रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर 500 प्रतिशत का टैरिफ लगाने का बिल पेश किया है। उनका दावा है कि इस बिल को 84 सीनेटरों का समर्थन हासिल है। साथ ही राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने उन्हें बिल को आगे बढ़ाने के लिए हरी झंडी उन्हें दे दी है। एक टीवी चैनल को दिए इंटरव्यू में ग्राहम ने खास तौर पर चीन और भारत का जिक्र किया। कहा कि ये दोनों देश रूस से तेल की खरीदारी कर रूस के युद्ध तंत्र की मदद कर रहे हैं। यह बिल सचमुच पारित होता है और उस पर राष्ट्रपति दस्तखत कर देते हैं, तो फिर भारत (और चीन) को रूस से तेल या अन्य वस्तुओं की खरीदारी करने या अमेरिका से व्यापार करने के बीच किसी एक का चुनाव करना होगा। मुक्त व्यापार के नजरिए से देखें, तो यह अमेरिका की तरफ से लगाया गया एक गैर-व्यापार अवरोध होगा। अमेरिका ऐसी रुकावटों का इस्तेमाल अक्सर अपने सामरिक एवं भू-राजनीतिक मकसदों को हासिल करने के लिए करता है। ट्रंप ने में अपने टैरिफ वॉर के जरिए तमाम देशों के सामने अमेरिकी शर्तों के मुताबिक कारोबार करने की मजबूरी पहले ही खड़ी कर दी है। भारत जैसे देश इन नई परिस्थितियों के अनुरूप अमेरिका से द्विपक्षीय व्यापार समझौता (बीटीए) करने की प्रक्रिया में हैं। अब नई स्थिति यह है कि बीटीए के अतिरिक्त, एक बिल्कुल गैर-व्यापार कारण से, टैरिफ की एक नई तलवार फिर सिर पर आ लटकी है। तो फिर द्विपक्षीय समझौते का फायदा क्या होगा? इसलिए यह अनिवार्य हो गया है कि मौजूदा वार्ता के क्रम में ही भारत ट्रंप प्रशासन से स्पष्टीकरण मांगे। यह साफ कर दिया जाना चाहिए कि किसी अन्य कारण से भारत पर नए टैरिफ लगाए गए, तो यह बीटीए का उल्लंघन होगा। दो टूक ट्रंप प्रशासन को यह बताया जाना चाहिए कि उन स्थितियों में बीटीए पर पालन करने के लिए भारत विवश नहीं होगा। पहले ही, बीटीए वार्ता के तहत ट्रंप प्रशासन भारत के लिए अस्वीकार्य शर्तों को थोपने की कोशिश में है। ऊपर से एक नई तलवार लटका दी गई है।

हिमाचल बनाम ओडिशा की घटना का फर्क

मंगलवार को दो राज्यों में एक जैसी दो घटनाएं हुईं। हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस के नेता और राज्य सरकार के मंत्री अनिरूद्ध सिंह ने राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण यानी एनएचएआई के एक अधिकारी के साथ मारपीट की। उनको अपमानित किया। इस घटना पर देश भर में उबाल आ गया। अनिरूद्ध सिंह के खिलाफ तत्काल एफआईआर दर्ज की गई और केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि एनएचएआई के अधिकारियों के साथ बदतमीजी करने वाले मंत्री के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई हो। भाजपा का पूरा इकोसिस्टम हिमाचल की घटना को लेकर कांग्रेस पर हमलावर है। लेकिन मंगलवार को ही ओड़िशा में बिल्कुल ऐसी ही घटना हुई है। भुवनेश्वर में भाजपा के एक निगम पार्षद अनरूप नारायण राउत भुवनेश्वर नगर निगम के एक वरिष्ठ अधिकारी को बुरी तरह से पीटा। राउत और उनके साथ गए गुंडों ने नगर निगम के अधिकारी को उनके कार्यालय से घसीट कर बाहर आम लोगों के सामने बुरी तरह से पीटा। इसका वीडियो चारों तरफ वायरल है। लेकिन किसी ने भाजपा के पार्षद राउत पर एफआईआर करने या सख्त से सख्त कार्रवाई की मांग नहीं की है। पार्टी की ओर से सिर्फ इतना किया गया है कि उनको और उनके साथ तीन चार अन्य लोगों को पार्टी से निलंबित कर दिया गया है।

क्या भारत ग्लोबल साउथ में अपनी खोई विरासत फिर हासिल कर पाएगा

'ऑपरेशन सिंदूर' के बाद तमाम सवालों से घिरे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जब घाना की धरती पर उतरे, तो उनके कदमों में 75 साल की उम्र की थकान और हार न मानने की जिद एकसाथ झलक रही थी। अक्रा के हवाई अड्डे पर, हल्के नीले नेहरू जैकेट में सजे मोदी का चेहरा तनाव और सुकून के मिश्रित भाव लिए था। शायद यह नेहरू जैकेट सिर्फ एक परिधान नहीं, बल्कि उस नेहरू की याद का प्रतीक था, जिन्होंने कभी घाना की जनता को आजादी और ग्लोबल साउथ की एकजुटता का सपना दिखाया था। घाना के राष्ट्रपति जॉन ड्रामानी महामाहा ने उनका स्वागत किया, लेकिन हवा में सवाल गूँज रहे थे। ऑपरेशन सिंदूर की आधी-अधूरी कहानी, अमेरिका की मध्यस्थता की खबरों ने भारत की स्वायत्तता को कटघरे में खड़ा किया है, और हालिया भारत-पाक तनाव में चीन की सैन्य मदद ने ग्लोबल साउथ में भारत की साख को दांव पर ला दिया है। क्या यह घाना, जो कभी गांधी और नेहरू की अहिंसा व साझेदारी से प्रेरित था, मोदी के नेतृत्व में भारत के ग्लोबल साउथ के सपने को नया जीवन दे पाएगा? क्या यह यात्रा, गंभीर सवालों से जूझ रही विदेश नीति को पुनर्परिभाषित करने की बजाय, एक और कूटनीतिक शो बनकर रह जाएगी?

पिछले महीने पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारत ने सीमित सैन्य कार्रवाई की। सेना निर्णायक कदम के लिए तैयार थी, मगर आखिरी पल में राजनीतिक नेतृत्व ने कदम पीछे खींच लिए। इंडोनेशिया में तैनात नौसेना अधिकारी कैप्टन शिव कुमार ने खुलासा किया, "हम तैयार थे, लेकिन रणनीति में स्पष्टता की कमी ने हमें रोका।" इस खुलासे ने देश में हलचल मचा दी। अमेरिका की मध्यस्थता की खबरों ने भारत की स्वायत्त कूटनीति पर सवाल उठाए। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने तंज कसा, "मोदी सरकार की विदेश नीति अब फोटो सेशन और खोखली घोषणाओं तक सिमट गई है। नीतिगत दृढ़ता गायब है।" पर्दे के पीछे, चीन की भूमिका ने आग में घी डाला। हालिया भारत-पाक तनाव में चीन ने पाकिस्तान को फाइटर जेट, मिसाइल, और सैटेलाइट डेटा देकर समर्थन दिया, जिसे विशेषज्ञ भारत के खिलाफ रणनीतिक चाल मानते हैं। इस तूफानी माहौल में मोदी अक्रा पहुंचे। घाना की संसद में उनका स्वागत पारंपरिक ढोल की थाप और स्थानीय गीतों ने किया। मोदी ने ट्वीट किया, "अक्रा पहुंचना सम्मान की बात है। राष्ट्रपति महामाहा का स्वागत हमारे पुराने, भरोसेमंद रिश्तों का प्रतीक है। हम भारत-घाना संबंधों को नई ऊँचाइयों पर ले जाएंगे।" लेकिन सवाल वही है—क्या यह यात्रा ऑपरेशन सिंदूर की चूक, अमेरिका पर निर्भरता, और चीन की बढ़ती चुनौती को पार कर भारत की साख सुधारेगी? या यह सिर्फ एक और कूटनीतिक चमक-दमक बनकर रह जाएगी?

अक्रा के बाजारों में भारतीय मसालों की खुशबू और बॉलीवुड गानों की गूँज घाना को भारत से जोड़े रखती है। यह रिश्ता कागजी कूटनीति से कहीं गहरा है—यह साझा संघर्ष और सपनों की कहानी है। 1950 के दशक में घाना के पहले राष्ट्रपति क्वामे एनक्रूमा भारत आए। गांधी की अहिंसा और नेहरू की 'ग्लोबल साउथ' की सोच ने उन्हें इतना प्रभावित किया कि उन्होंने घाना की आजादी की लड़ाई को नई दिशा दी। 1957 में घाना के आजाद होने पर भारत ने वहाँ अपना पहला दूतावास खोला। एक पुराना किस्सा है—1960 में नेहरू की घाना यात्रा के दौरान एनक्रूमा ने उन्हें एक शानदार 'केन्टे' कपड़ा भेंट किया, जो आज अक्रा के नेशनल म्यूजियम में प्रदर्शित है। उस स्वागत में स्थानीय जनजातियों ने ढोल-नगाड़ों के साथ नृत्य किया, और नेहरू की सादगी ने सबका दिल जीत लिया। 2011 में मनमोहन सिंह की यात्रा भी कम यादगार नहीं थी। नीली पगड़ी और सादे सूट में वह घाना की संसद में बोले, "भारत अफ्रीका का प्राकृतिक सहयोगी है। हमारा रिश्ता संसाधनों या निवेश तक सीमित नहीं, बल्कि साझा विकास और मानवीय सहयोग पर आधारित है।" उनकी बातों में

गहराई थी, और स्वागत में घानाई गायकों ने पारंपरिक गीत गाए।

भारत-घाना व्यापार नेहरू काल से लंबा सफर तय किया है। 2004 में यह महज 213 मिलियन डॉलर था, जो मनमोहन सिंह के कार्यकाल में 2013-14 तक 1.2 अरब डॉलर पहुंचा। मोदी सरकार में यह 2017-18 में 3.34 अरब और 2018-19 में 4.48 अरब डॉलर तक गया, लेकिन 2023-24 में 2.51 अरब तक सिमट गया। 2024-25 (अप्रैल-अक्टूबर) में शुरुआती व्यापार 3.13 अरब डॉलर रहा। भारत का व्यापार घाटा बढ़ा है, क्योंकि घाना से सोना और तेल (घाना के निर्यात का 70%) तेजी से आयात हो रहा है। भारत ने घाना को 450 मिलियन डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट (LoC) दी, जिससे गांवों में बिजली, आईटी पार्क, और स्वास्थ्य सुविधाएँ बनीं। लेकिन चुनौती सामने खड़ी है—चीन। घाना इन्वेस्टमेंट प्रमोशन सेंटर (GIPC) के मुताबिक, भारत प्रोजेक्ट संख्या में दूसरे स्थान पर है, लेकिन निवेश राशि में चीन, स्पेन, और मिस्र से पीछे है। 1994-2024 में भारत का निवेश 1.92 अरब डॉलर रहा, जबकि चीन का इससे कहीं अधिक। 2023 में भारत का निवेश 77.93 मिलियन डॉलर था, लेकिन चीन की आर्थिक पकड़ मजबूत है। हालिया भारत-पाक तनाव में चीन ने पाकिस्तान को फाइटर जेट, मिसाइल, और सैटेलाइट डेटा देकर समर्थन दिया, जिसे विशेषज्ञ भारत के खिलाफ रणनीतिक चाल मानते हैं। घाना की सड़कों पर पारंपरिक नृत्यों की रौनक के बीच मोदी की यह यात्रा सिर्फ भारत-घाना दोस्ती की कहानी नहीं है। यह ग्लोबल साउथ में भारत की साख को पुनर्जनन करने और चीन की आक्रामकता को टक्कर देने की कोशिश है। चीन ने अफ्रीका में 200 बिलियन डॉलर से अधिक का निवेश किया है, जबकि भारत 80 बिलियन के आसपास है। घाना में चीन की पकड़ इंफ्रास्ट्रक्चर और खनन में मजबूत है। लेकिन भारत की ताकत उसकी सॉफ्ट पावर में है—ऐतिहासिक दोस्ती, सांस्कृतिक जुड़ाव, और लोकतांत्रिक मूल्य। मोदी की यह यात्रा आर्थिक प्रतिद्वंद्विता का नया अध्याय भी शुरू कर सकती है। घाना के तेल-गैस भंडार, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, और ग्लोबल साउथ में नेतृत्व के लिए भारत के पास मौका है। यह भारत के लिए न सिर्फ घाना, बल्कि पूरे अफ्रीका में अपनी स्थिति मजबूत करने का अवसर है, बशर्ते यह चीन की रणनीति को संतुलित करने के लिए स्पष्ट कदम उठाए। अक्रा के बाजारों में भारतीय मसालों की खुशबू और अमिताभ बच्चन व शाहरुख खान की फिल्मों की गूँज घाना को भारत से जोड़े रखती है। 15,000 भारतीय समुदाय, योग, और क्रिकेट यहाँ भारत की सॉफ्ट पावर हैं। एक पुराना किस्सा है—1980 के दशक में 'डिस्को डांसर' ने घाना के सिनेमाघरों को फिर से जिंदा कर दिया। आज भी वहाँ के बुजुर्ग "आओ, ओम शांति ओम" गुनगुनाते हैं। लेकिन चीन और यूरोपीय देशों की आक्रामक मौजूदगी ने भारत के लिए मुकाबला कठिन कर दिया। घाना की सड़कों पर बच्चों के नृत्य और पारंपरिक गीत भारत-घाना की दोस्ती की गर्मी दिखाते हैं, मगर क्या यह नीतिगत ठोस कदमों में बदलेगा? घाना की संसद से लेकर अक्रा की सड़कों तक, मोदी की यह यात्रा कोई साधारण कूटनीति नहीं। यह भारत की विदेश नीति की अग्निपरीक्षा है। भारत कई मोर्चों पर जूझ रहा है। ऑपरेशन सिंदूर का अधूरा नतीजा जनता के मन में सवाल छोड़ गया है। कैप्टन शिव कुमार जैसे सैन्य अधिकारियों ने सरकार की रणनीतिक अस्पष्टता पर उंगली उठाई है। अमेरिका की मध्यस्थता की खबरों ने भारत की स्वायत्तता को कटघरे में खड़ा किया। और अब, चीन की पाकिस्तान को सैन्य मदद ने भारत को ग्लोबल साउथ में अपनी साख बचाने की चुनौती दी है। मोदी के सामने सवाल है—कि क्या वह इस यात्रा को भाषणों और ट्वीट्स से आगे ले जा पाएंगे? यह मौका है—नेहरू और एनक्रूमा की ऐतिहासिक दोस्ती को नया जीवन देने का, ग्लोबल साउथ में भारत की पुरानी साख को पुनर्जीवित करने का, और चीन की आक्रामकता का मुकाबला करने का। अगर यह यात्रा भाषणबाजी तक सिमट गई, तो विपक्ष का तंज—"विदेश नीति उड़ानों और उद्घाटनों तक सीमित है"—और गहरा हो जाएगा। घाना भारत के लिए एक रणनीतिक खजाना है। इसके बाजारों में कोको और सोने की चमक भारत की आर्थिक भूख को ललचाती है। यह देश तेल, बॉक्साइट, और कोको का पावरहाउस है। भारत ने यहाँ आईसीटी, हेल्थकेयर, कृषि, और इंफ्रास्ट्रक्चर में निवेश किया है। 450 मिलियन डॉलर की लाइन ऑफ क्रेडिट ने घाना के गाँवों में बिजली, आईटी पार्क, और अस्पताल बनाए हैं। घाना का तेल भारत की ऊर्जा जरूरतों को मिटा सकता है। अटलांटिक महासागर के समुद्री मार्ग भारत की सुरक्षा रणनीति का हिस्सा हैं। और सबसे बड़ी बात, घाना ग्लोबल साउथ में भारत के नेतृत्व को मजबूत करने का रास्ता खोल सकता है। घाना की सामाजिक ताकत भी अनोखी है। यहाँ महिलाओं की आबादी पुरुषों से अधिक है, जो सामाजिक बदलाव की मिसाल है। भारत के लिए यह मौका है—साझा लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देने का, और अफ्रीका में अपनी सॉफ्ट पावर को चमकाने का। लेकिन चीन की गहरी आर्थिक पकड़ और यूरोपीय देशों की नई सक्रियता रास्ते में रोड़े हैं। घाना की सड़कों पर पारंपरिक नृत्यों की रौनक भारत-घाना की दोस्ती की गर्मी दिखाती है। मोदी की इस यात्रा से भारत और घाना नये बदलते वैश्विक दौर में रिश्तों की नयी परिभाषा लिखें, यह दोनों देशों की जनता चाहेगी। इसके लिए दोनों देशों को दिखावे से अलग जमीनी हकीकत और जरूरत के हिसाब से ठोस कदम उठाने होंगे। यह यात्रा तस्वीरों और ट्वीट्स की चमक से आगे बढ़नी चाहिए। यह भारत के लिए मौका है—ग्लोबल साउथ में नेतृत्व को नई परिभाषा देने का, ऐतिहासिक साझेदारी को ठोस नीतियों में बदलने का, और चीन से मुकाबले के लिए रणनीतिक स्पष्टता लाने का। घाना का इतिहास हमें सिखाता है कि सच्ची दोस्ती परस्पर विश्वास और ठोस कदमों से बनती है। नेहरू और एनक्रूमा ने यह दिखाया था। क्या मोदी इस बार उस विरासत को नया जीवन दे पाएंगे, या यह यात्रा एक और कूटनीतिक सैर-सपाटा बनकर रह जाएगी? भारत को चाहिए रणनीतिक स्पष्टता, आर्थिक ताकत, और सांस्कृतिक जुड़ाव। अगर यह मौका चूक गया, तो सुर्खियाँ भले बनें, मगर भारत का अफ्रीकी सपना अधूरा रह जाएगा।

- ओंकारेश्वर पांडेय

मनी ट्रांसफर के ज़रिए!

यह सुनिश्चित करने की जरूरत होगी कि सरकार जो पैसा दे, उससे सचमुच उसके लक्ष्य हासिल हों। वरना, ताजा घोषित योजनाएं रोजगार और अनुसंधान की सूरत सुधारने के बजाय निजी क्षेत्र को मनी ट्रांसफर का माध्यम भर बन कर रह जाएंगी। केंद्र ने दो वर्षों के अंदर साढ़े तीन करोड़ स्थायी नौकरियां दिलवाने और अनुसंधान, विकास एवं आविष्कार (आरएंडडी) को बढ़ावा देने के लिए एक-एक लाख करोड़ रुपये की दो योजनाओं का एलान किया है। दोनों का सार यह है कि सरकार अपने खजाने से ये बड़ी रकम प्राइवेट सेक्टर को ट्रांसफर करेगी और उनसे अपेक्षा रखी जाएगी कि वे सरकार के लक्ष्यों को पूरा करें। इम्पलॉयमेंट लिंक्ड इन्सेंटिव योजना के तहत नौकरी पाने वाले व्यक्ति को दो किस्तों में 15,000 रुपये दिए जाएंगे। नौकरी देने वाली कंपनी को हर नई नौकरी पर दो साल तक तीन हजार रुपये महीने का प्रोत्साहन मिलेगा। आरएंडडी प्रोत्साहन योजना के तहत अनुसंधान के लिए दीर्घकालिक वित्तीय सहायता दी जाएगी। साथ ही रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों

में तकनीक हासिल करने के लिए भी वित्तीय सहायता सरकार देगी। स्वच्छ ऊर्जा, जलवायु तकनीक, डीप टेक, एआई और डिजिटल एग्रीकल्चर वे संभावित क्षेत्र हैं, जिनमें इस योजना के जरिए सरकार भारत को तकनीक महाशक्ति बनाना चाहती है। इन योजनाओं पर गौर करते हुए सहज ही 2015 में शुरू की गई स्किल इंडिया योजना की याद आ जाती है। उस योजना के जरिए भारत को कुशल कर्मियों का केंद्र बनाने की महत्त्वाकांक्षा जताई गई थी। बताया जाता है कि अब तक सवा दो करोड़ लोग इस योजना का लाभ उठा चुके हैं। मगर आरोप है कि प्राइवेट सेक्टर की कंपनियों ने सरकारी धन के जरिए अपने कर्मियों को प्रशिक्षित किया। यानी मोटे तौर पर यह निजी क्षेत्र को सरकारी धन के ट्रांसफर की योजना बन गई। नई योजनाओं के मामले में हकीकत यह है कि निवेश और रोजगार की स्थितियां बाजार में मांग से तय होती हैं। कोई कंपनी सिर्फ इसलिए अपने काम का प्रसार नहीं करती कि उसे नए लोगों को नौकरी देनी है। आरएंडडी के मामले में तो निजी क्षेत्र की दिलचस्पी वैसे भी कम रही है। इसलिए यह सुनिश्चित करने की जरूरत होगी कि सरकार जो पैसा दे, उससे सचमुच उसके लक्ष्य हासिल हों। वरना, ये योजनाएं रोजगार और अनुसंधान की सूरत सुधारने के बजाय निजी क्षेत्र को मनी ट्रांसफर का माध्यम भर बन कर रह जाएंगी।

फट गया है " हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान" की नारेबाजी का गुब्बारा!"

झूठे नारों का गुब्बारा फटना था। बहुत ज्यादा हवा भर दी। कांग्रेस पीओके नहीं ले पाई हम ले लेंगे। सेना को खुली छूट नहीं देते थे हम देंगे। अंग्रेजी बोलना शर्म की बात होगी। हिंदी को दक्षिण की भी भाषा बना देगें। यहां महाराष्ट्र जिसका एक हिस्सा विदर्भ पूरा हिंदी भाषी है वहां से भी हिंदी हटा ली। आम जनता नहीं, भाजपा के कट्टर समर्थकों में भी बैचेनी है। खुद पार्टी में और संघ में भी। हंड्रेड परसेन्ट अगर कोई अभी भी मोदी का समर्थन कर रहा है तो वह गोदी मीडिया है। सिर्फ उसके सहारे मोदी बाजी पलटने की कोशिश कर रहे हैं। क्या समझ आया कि मोदी सरकार डबल सरकार के बावजूद हिंदी के लिए भी डटे नहीं रह सकी! महाराष्ट्र में डबल इंजन की सरकार ने हिंदी को पढ़ाए जाने का फैसला वापस ले लिया। हिंदी, हिंदू और हिंदुस्तान का ही तो नारा था भाजपा का। सबसे बड़ा, सबसे मुख्य। हिंदी पर झुक गए। हिंदुस्तान पर अभी आपने देखा ही की ट्रंप हमारे नाम पर फैसले कर रहे है। अमेरिका के राष्ट्रपति ने कहा था शाम पांच बजे सीजफायर हो जाएगा। और हमने कर दिया। हिंदुस्तान का नाम लेते थे अपने विशेष उच्चारण के साथ यह बताने के लिए कि यह केवल हिंदुओं का स्थान है। हिंदुस्तान में यह बहस आ जाती है कि सिंधु घाटी में प्रवेश करते समय तुर्क और ईरानियों ने इसे अपने उच्चारण में सिंधू के बदले हिंदू कहा था। वे स का उच्चारण ह करते थे। बहुत सारी कहानियां हैं। यह भी कहा जाता है कि यहां रहने वालों को फारसी और अरबी में हिंदू कहा जाता था। इसलिए हिंदुस्तान नाम पड़ा। यह जो नारा हमने उपर लिखा है इसमें मूल रूप से हिंदुस्तान शब्द ही था। कुछ साहित्यकार जो उर्दू के और भारत की मिलीजुली संस्कृति के खिलाफ थे यह उनका दिया हुआ नारा है। जो भाजपा संघ के जन्म से भी पहले का है। इसी को भाजपा संघ ने हिंदुस्तान को हिंदुस्थान में परिवर्तित करके अपना मूल नारा बनाया। जो लोग भाजपा की सरकारों द्वारा रोज नाम परिवर्तन करने पर आश्चर्य करते हैं उनकी हैरत थोड़ी कम होगी जब उन्हें यह मालूम पड़ेगा कि उनकी यह राजनीति शुरू से है। अभी लेटेस्ट यह देख लिया होगा कि विदेश में प्रधानमंत्री मोदी के पहुचने पर वहां रह रही एक महिला कहती है कि पहले हमसे कहते थे भारत से आए हो और सम्मान नहीं मिलता था। अब कहते हैं मोदी के देश से आए हो और सम्मान से देखते हैं। हो सकता है देश का नाम मोदी का देश रख दिया जाए। तो हिंदुस्तान से आगे मोदी का देश तक का सफर हो सकता है। लेकिन वह तब जब मोदी आज जिस तरह हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान पर घिरे हुए हैं उससे निकल पाएं। प्रधानमंत्री मोदी के लिए 11 साल के कार्यकाल में मौजूदा समय सबसे प्रतिकूल है। और विपक्ष के लिए सबसे अनुकूल। लेकिन विपक्ष क्या कर पाता है इससे ही फैसला होगा कि मोदी बच कर निकल पाते हैं या यह सीजफायर, सेना का यह आरोप

कि उसके हाथ बांध दिए जिसकी वजह से उसे अपने जेट (युद्धक विमान) खोने पड़े और हिंदी पर भी लुढ़कना हुआ। यह सब उनके लिए वाटरलू बन सकता है। यह समय भ्रष्टाचार, जीएटी, बेरोजगारी और बहुत सारे दूसरे मुद्दों को उठाने का नहीं है। इन्हे विपक्ष उठाता रहा है। राहुल गांधी ने चौकीदार ही चोर है से लेकर गब्बर सिंह टैक्स तक सब कहा। मगर मोदी पर ये हमले बेअसर रहे। कांग्रेस इस समय भी यही सवाल उठा रही है। इन्हें मोदी देखते ही नहीं हैं। उनकी सेहत पर इन सवालों का कोई असर नहीं पड़ता है। लेकिन जैसा हमने शुरू किया हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान वह इनका मर्म है। और आज विपक्ष को वही मर्मभेदी बाण चलाने की जरूरत है। भाजपा का हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान या स्थान का सारा नेरटिव (इमेज, माहौल) मोदी ने फेलकर दिया है। भाजपा पूरी तरह एक्सपोज हो गई है। हिंदी का हमने बताया। सबसे ज्यादा राजनीति इसी पर करते हैं। मगर महाराष्ट्र में भाजपा की डबल इंजन सरकार ने कक्षा एक से पांच तक हिंदी पढ़ाने के अपने फैसले को वापस ले लिया। अब इन क्लासों में शिक्षा का माध्यम मराठी या अंग्रेजी होगा। वहीं अंग्रेजी जिस के लिए अभी कुछ दिन पहले भाजपा और केन्द्र सरकार के नंबर दो नेता अमित शाह ने कहा था कि इसे बोलने वालों को शर्म आएगी। अब वही पढ़ाई का माध्यम है। क्योंकि मराठी वाले तो मराठी माध्यम से पढ़ ही रहे हैं। केवल हिंदी वालों को अब मराठी या अंग्रेजी माध्यम में जाना होगा। यह लोग केवल बोलते हैं। उस पर अमल क्या होता है यह अब दिखने लगा है। 15 लाख आएंगे हर खाते में, दो करोड़ रोजगार देंगे हर साल और बाकी घोषणाओं का कचूमर पहले ही निकल चुका है। मगर अभी भी टिके हैं तो वह इन्हीं तीन आधारों पर। हिंदी छोड़ दी। हिंदुस्तान का सम्मान दांव पर लगा दिया। अभी जो ट्रंप 20 बार कह चुके है कि बिजनेस के लिए सीजफायर किया वह सामने दिखने वाला है। डील तैयार हो गई है। केवल भारत को दस्तखत करना है। या ज्यादा सही यह कहना होगा कि केवल स्वीकार करना है। पूरी तरह भारत की कृषि व्यवस्था की विरोधी, यहां के लघु, मध्यम उद्योगों को खत्म करने वाली पूरी तरह अमेरिका के पक्ष में झुकी हुई व्यापार संधि। अब सवाल हिंदू का। उसे क्या दिया? पूरे नारे में सजीव तो वही है। हिंदी और हिंदुस्तान की प्रगति से मिलना तो उसी को चाहिए। केवल एक झूठा गर्व। और वह भी उसे कुछ देकर नहीं केवल यह बताकर कि मुस्लिम को इतना टाइट कर दिया है। नमाज, अजान, कब्रिस्तान, वक्फ उसके हर मामले में सवाल उठाकर उसे पीछे धकेल दिया है। 11 साल से एक छोटा सा हिस्सा मानता रहा कि मुस्लिम दबा दिया गया है। और मोदी का राष्ट्रवाद चमक रहा है। लेकिन पहले पहलगाम के आतंकवादी हमले और उसके दोषियों का आज तक पता भी नहीं कर पाने, फिर सीजफायर और अब सेना द्वारा यह बताए जाने के हमें अपनी गलती से नुकसान नहीं राजनीतिक नेतृत्व की गलती से नुकसान उठाना पड़ा मोदी की चमक धुंधली पड़ गई। फिर हिंदी के मामले में भी भाजपा की पलटी ने उसका यह अहसास और बड़ा दिया कि राष्ट्रवाद की तरह भाषा की बात भी खाली हमें बरगलाने के लिए थी। मोदी को सिवा अपनी राजनीति के किसी और मामले में चाहे वह देश, भाषा हिंदी कुछ भी हो किसी से कोई जुड़ाव नहीं है। और अगर हिंदी और हिंदुस्तान से नहीं है तो फिर हम हिंदू से भी नहीं। यहां हिंदू का मतलब उनके नारे के संदर्भ में ही है। बाकी हिंदुओं का बड़ा वर्ग शुरू से मोदी के जुमलों को समझता रहा है। इसलिए उन्हें इन्दिरा और राजीव गांधी की तरह साढ़े तीन सौ और चार सौ से उपर सीटें कभी नहीं दीं। झूठे नारों का गुब्बारा फटना था। बहुत ज्यादा हवा भर दी। कांग्रेस पीओके नहीं ले पाई हम ले लेंगे। सेना को खुली छूट नहीं देते थे हम देंगे। अंग्रेजी बोलना शर्म की बात होगी। हिंदी को दक्षिण की भी भाषा बना देगें। यहां महाराष्ट्र जिसका एक हिस्सा विदर्भ पूरा हिंदी भाषी है वहां से भी हिंदी हटा ली। आम जनता नहीं, भाजपा के कट्टर समर्थकों में भी बैचेनी है। खुद पार्टी में और संघ में भी। हंड्रेड परसेन्ट अगर कोई अभी भी मोदी का समर्थन कर रहा है तो वह गोदी मीडिया है। सिर्फ उसके सहारे मोदी बाजी पलटने की कोशिश कर रहे हैं। विपक्ष के लिए इससे अनुकूल अवसर दूसरा नहीं हो सकता। बाकी सारे मुद्दे इस समय चलने वाले नहीं हैं। केवल भारत पाक संघर्ष में मोदी के ब्लंडर ही सबसे बड़ा मुद्दा है। विपक्ष और खासतौर से मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस अगर केवल एक इसी मुद्दे पर खुद को केन्द्रीत कर ले तो मोदी के पास जवाब देने को कुछ नहीं होगा। मोदी देश का सम्मान बचा नहीं पाए। इन्दिरा होतीं तो बात कुछ और होती यह चर्चा आज हर जगह है। इसी पर मोदी की मात हो सकती है। और अगर विपक्ष ने यहां उन्हें निकल जाने दिया तो फिर मोदी नई जान पा जाएंगे। भाजपा और संघ की सुगबुगाहट भी खत्म हो जाएगी। क्रिकेट की तरह राजनीति में भी एक मौका मिलता है और अगर वह कैच नहीं पकड़ पाए लाइफ दे दी तो फिर जमा हुआ बैट्समैन और मुश्किलें खड़ी कर देगा।

इंग्लैंड को मुश्किल से निकाला, अब ठोक दिया शतक, टीम इंडिया के पास नहीं दिख रहा हैरी ब्रूक का जवाब

एजेंसी बर्मिंघम

इंग्लैंड के विस्फोटक बल्लेबाज हैरी ब्रूक ने भारत के खिलाफ दूसरे टेस्ट में शतक ठोक दिया है। पहले टेस्ट की पहली पारी में वह सिर्फ एक रन से शतक लगाने से चूक गए थे लेकिन इस बार ब्रूक ने वह गलती नहीं की। इंग्लैंड ने पहले तीन विकेट सिर्फ 25 रन पर खो दिए थे। 84 रन पर आधी टीम पवेलियन लौट चुकी थी। इसके बाद हैरी ब्रूक ने जेमी स्मिथ के साथ मिलकर पारी को संभाला। स्मिथ ताबड़तोड़ रन बना रहे थे तो ब्रूक ने एक छोर से संभलकर बैटिंग की। हैरी ब्रूक का यह टेस्ट में भारत के खिलाफ पहला शतक है। 137 गेंद पर 12 चौके और एक छक्के की मदद से वह शतक तक पहुंचे। 26 साल के ब्रूक का यह भारत के खिलाफ दूसरा ही टेस्ट है। पिछले साल वह भारत दौरे पर नहीं आए थे। सबसे ज्यादा चार शतक उन्होंने पाकिस्तान और तीन न्यूजीलैंड के खिलाफ बनाए हैं। 2022 में ब्रूक ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ टेस्ट डेब्यू किया था। वह टेस्ट में तिहरा शतक भी लगा चुके हैं।

इंग्लैंड के लिए सबसे कम पारियों में नौ टेस्ट शतक
37 - डेनिस कॉम्पटन
43 - हर्बर्ट सटक्लिफ़
44 - हैरी ब्रूक
50 - वैली हैमंड
52 - माइकल वॉन

ब्रूक के 2500 रन भी हुए पूरे

इसी पारी के मैदान हैरी ब्रूक ने टेस्ट में अपने 2500 रन पूरे किए। वह ऐसा करने वाले इंग्लैंड के 52वें क्रिकेटर हैं। सबसे ज्यादा 13109 रन जो रूट के नाम हैं। ब्रूक का अभी टेस्ट में बल्लेबाजी औसत 60 से ज्यादा का है। इंग्लैंड के लिए 2500 से ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाजों में सिर्फ हर्बर्ट सुटक्लिफ का औसत से 60 से ऊपर का है। उन्होंने 1924 से 1935 के बीच इंग्लैंड के लिए 54 टेस्ट में 60.73 की औसत से 4555 रन बनाए थे।

टेस्ट में वनडे जैसा शतक... बर्मिंघम में जेमी स्मिथ की आंधी, टीम इंडिया के गेंदबाजों के पास कोई जवाब नहीं

एजेंसी बर्मिंघम

भारत और इंग्लैंड के बीच बर्मिंघम में दूसरा टेस्ट मैच खेला जा रहा है। इस मैच के तीसरे दिन मोहम्मद सिराज ने भारतीय टीम को कमाल की शुरुआत दिलाई। सिराज ने इंग्लैंड के लगातार 2 बल्लेबाजों को आउट कर आग उगल दी। लेकिन इसके बाद इंग्लैंड के विकेटकीपर जेमी स्मिथ ने भारतीय गेंदबाजों को धो दिया। जेमी स्मिथ ने इस मैच में फंसी हुई इंग्लैंड की टीम को एक बेहतरीन शतक मार मुसीबत से निकाल दिया। जेमी स्मिथ ने सिर्फ 80 गेंदों पर शतक ठोका है। भारतीय टीम के गेंदबाजों पर जेमी स्मिथ ने गजब का हमला बोला। जेमी स्मिथ ने 80 गेंदों पर शतक पूरा करते हुए टीम इंडिया को प्रेशर में डाल दिया। स्मिथ ने अपनी पारी में 14 चौके और 3 छक्के लगाए हैं। उन्होंने अपना शतक भी रविंद्र जडेजा की लगातार दो गेंदों पर दो चौके लगाकर पूरा किया है। 76 गिल्बर्ट जेसप बनाम ऑस्ट्रेलिया द ओवल 1902 77 जॉनी बेयरस्टो बनाम न्यूजीलैंड ट्रेंट ब्रिज 2022 80 हैरी ब्रूक बनाम पाक रावलपिंडी 2022 80 जेमी स्मिथ बनाम इंड एजबेस्टन 2025 85 बेन स्टोक्स बनाम न्यूजीलैंड लॉर्ड्स 2015 इससे पहले भारतीय टीम ने इंग्लैंड की टीम को परेशानी में डाल दिया था। दिन शुरू होते ही मोहम्मद सिराज ने लगातार दो गेंदों पर इंग्लैंड के दो बल्लेबाजों को आउट कर दिया था। सिराज ने पहले जो रूट को 22 रन पर आउट किया। इसके बाद अगली ही गेंद पर उन्होंने बेन स्टोक्स को भी आउट कर दिया। इससे 84 रन पर इंग्लैंड की आधी टीम आउट हो गई। लेकिन इसके बाद जेमी स्मिथ ने हैरी ब्रूक के साथ मिलकर इंग्लैंड को मुसीबत से निकाल दिया। दोनों बल्लेबाजों ने सिर्फ 154 गेंदों पर 165 रन जोड़ दिए। इससे लंच तक इंग्लैंड की टीम का स्कोर 5 विकेट पर 249 रन हो गया। जेमी स्मिथ 102 और हैरी ब्रूक 91 रन बनाकर खेल रहे हैं।

हैरी ब्रूक ने ठोकी कमाल की सेंचुरी, इंग्लैंड ने की मैच में वापसी

एजेंसी बर्मिंघम

इंग्लैंड के एजबेस्टन में चल रहे दूसरे टेस्ट मैच में भारत ने अपनी पहली पारी में 587 रनों का विशाल स्कोर खड़ा कर इंग्लैंड को बैकफुट पर धकेल दिया है। इस शानदार पारी का मुख्य आकर्षण कप्तान शुभमन गिल का ऐतिहासिक दोहरा शतक रहा, जिन्होंने 269 रन बनाए। भारत की पारी में एक समय ऐसा भी आया था जब 211 रन पर 5 विकेट गिर चुके थे, लेकिन इसके बाद टीम इंडिया ने जबरदस्त वापसी की। शुभमन गिल ने एक छोर संभाले रखा और अपनी शानदार बल्लेबाजी से इंग्लैंड के गेंदबाजों को बेबस कर दिया। यह गिल का टेस्ट क्रिकेट में पहला दोहरा शतक है और यह उनका बतौर भारतीय कप्तान इंग्लैंड की धरती पर सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर भी है, जिसने सुनील गावस्कर के 221 रनों के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ दिया। फिलहाल इंग्लैंड पहली पारी में बैटिंग कर रहा है। दूसरे दिन के स्कोर 3 विकेट पर 77 रन से आगे खेलना शुरू किया। 51 ओवर के बाद इंग्लैंड का स्कोर 5 विकेट पर 269 रन है। ब्रूक 102 जबकि स्मिथ 111 रन बनाकर खेल रहे हैं। यहां क्लिक करके देखें मैच का स्कोरकार्ड। इंग्लैंड के लिए सबसे कम पारियों में नौ टेस्ट शतक
37 - डेनिस कॉम्पटन
43 - हर्बर्ट सटक्लिफ
44 - हैरी ब्रुक

50 - वैली हैमंड
52 - माइकल वॉन

जेमी स्मिथ के बाद हैरी ब्रूक ने भी टीम इंडिया के खिलाफ बर्मिंघम टेस्ट की पहली पारी में कमाल की सेंचुरी ठोक दी है। ब्रूक ने मात्र 137 गेंद पर अपना शतक पूरा किया। इंग्लैंड की टीम का स्कोर भी अब 250 रन के ऊपर पहुंच चुका है।

76 गेंद- गिल्बर्ट जेसप vs ऑस्ट्रेलिया (1902)
77 गेंद- जॉनी बेयरस्टो vs न्यूजीलैंड (2022)
80 गेंद- हैरी ब्रूक vs पाकिस्तान (2022)
80 गेंद- जेमी स्मिथ vs भारत (2025)
85 गेंद- बेन स्टोक्स vs न्यूजीलैंड (2015)

इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जेमी स्मिथ ने तूफानी शतक ठोक दिया है। जब वह बल्लेबाजी के लिए आए थे तो टीम ने 84 रन पर 5 विकेट खो दिए थे। इसके बाद भी स्मिथ ने गेंदबाजों पर अटैक कर दिया। 80 गेंदों पर उन्होंने अपनी सेंचुरी पूरी की। लंच से पहले आखिरी ओवर में उनका शतक हुआ। इंग्लिश टीम का स्कोर 200 रनों के पार पहुंच चुका है। जेमी स्मिथ और हैरी ब्रूक रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। दोनों ही बल्लेबाज आसानी से रन बना रहे हैं। रविंद्र जडेजा और वॉशिंगटन सुंदर भी प्रभावी साबित नहीं हो रहे हैं। स्मिथ 133 की स्ट्राइक रेट से बैटिंग कर रहे। जैसी स्मिथ और हैरी ब्रूक के बीच शतकीय साझेदारी हो गई है। सिर्फ 90 गेंदों पर दोनों ने 100 रन जोड़े हैं। इसमें स्मिथ का योगदान 64 रनों का है। ब्रूक ने 34 रन जोड़े हैं। साझेदारी में दोनों ने मिलकर 12 चौके और 2 छक्के लगाए हैं। जेमी स्मिथ ने अपनी फिफ्टी पूरी कर ली है। भारतीय गेंदबाज बैकफुट पर दिख रहे हैं क्योंकि स्मिथ लगातार अटैक कर रहे हैं। 34वें ओवर की पहली गेंद पर स्मिथ ने प्रसिद्ध के खिलाफ छक्का मारा। इस ओवर में भी 11 रन बने। 7 ओवर में प्रसिद्ध 54 रन दे चुके हैं। इंग्लैंड के विकेटकीपर बल्लेबाज जेमी स्मिथ ताबड़तोड़ बैटिंग कर रहे हैं। उन्होंने प्रसिद्ध कृष्णा के खिलाफ 32वें ओवर में 23 रन ठोक दिए। इस ओवर में उन्होंने 4 चौकों के अलावा एक छक्का मारा। एक वाइड गेंद होने की वजह से ओवर में कुल 23 रन बने। इंग्लैंड का स्कोर 150 के पार भी पहुंच गया है। ब्रूक और स्मिथ के बीच 63 गेंद पर 76 रनों की साझेदारी हो चुकी है।

डांट नहीं, एनर्जी टॉनिक... जब शुभमन गिल हुए थे पापा के गुस्से का शिकार, बड़ी पारी नहीं खेलने पर सरेआम भड़के थे

एजेंसी बर्मिंघम

आमिर खान स्टारर दंगल फिल्म में पिता का कैरेक्टर यानी गीता फोगाट के पिता महावीर फोगाट काफी कठोर होते हैं। हानिकारक बापू के रूप में वह अपनी बेटियों को हर हाल में जीतते देखना चाहते हैं और कई बार इसी वजह से छोटी-मोटी उपलब्धियों को भी सेलिब्रेट नहीं करते थे। यही हाल था शुभमन गिल के पिता का। गिल के शुरुआती दिनों में कोच भी रहे उनके पिता लखविंदर सिंह चाहते थे कि बेटा बड़ी पारी खेले। उनकी डांट ने टॉनिक का काम किया। अब देखिए, शुभमन गिल एक से बढ़कर एक बड़ी पारी खेल रहे हैं। भारतीय टीम के धुरंधर बल्लेबाज शुभमन गिल ने बर्मिंघम के एजबेस्टन में इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में शानदार 269 रन बनाकर इतिहास रच दिया है। एक समय ऐसा भी था हालांकि जब वह अपनी शतकीय पारियों को बड़े स्कोर में बदलने के लिए संघर्ष करते थे। 2023 की शुरुआत में जब गिल भारतीय टॉप ऑर्डर में शिखर धवन की जगह ले रहे थे, तब उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ घरेलू मैदान पर पहले वनडे में 70 और तीसरे वनडे में 116 रन बनाए थे। ये पारियां मैच जिताने वाली थीं, लेकिन जिस तरह से वह खेल रहे थे, खासकर तिरुवनंतपुरम में तीसरे वनडे में, उनसे कहीं बड़े स्कोर की उम्मीद थी। गिल ने अपना दूसरा वनडे शतक बनाया, लेकिन कप्तान रोहित शर्मा ने उन्हें आउट कर दिया, जबकि पारी में 16 से अधिक ओवर बाकी थे। दूसरे छोर पर विराट कोहली ने अपने शतक को नाबाद 166 रन में बदल दिया था। गिल के पिता लखविंदर गिल अपने बेटे की ठोस शुरुआत को यूं ही गंवाने की आदत से बिल्कुल खुश नहीं थे। गुरकीरत सिंह मान ने एक इंटरव्यू में बताया कि श्रीलंका के खिलाफ तीसरे वनडे में शुभमन गिल के आउट होने के बाद लखविंदर ने कहा था- आप देखिए वह कैसे आउट हो रहा है, शतक बनाने के बाद भी उसके पास दोहरा शतक बनाने का पर्याप्त समय था। उसे हर बार ऐसी शुरुआत नहीं मिलेगी। वह कब सीखेगा? 2022 में जिम्बाब्वे दौरे के दौरान, जहां वह अभी भी दूसरी पंक्ति की टीम के साथ थे, गिल ने पिछले मैच में अच्छी शुरुआत को भुनाने में नाकाम रहने के बाद तीसरे वनडे में अपना पहला शतक बनाया था। शुभमन गिल ने बताया था कि कम रन पर आउट हुए तो पिता ने लगाई थी डांट मैच के बाद की प्रेजेंटेशन में उन्होंने कहा था- मेरे पिता मेरे प्राथमिक कोच रहे हैं। परसों जब मैं 33 रन पर आउट हुआ तो मुझे थोड़ी डांट पड़ी थी। तो यह शतक मेरे पिता के लिए है। गिल ने श्रीलंका के खिलाफ अपने शतक को बड़े स्कोर में न बदलने के बाद अगले ही वनडे में सुधार किया। कुछ ही दिनों बाद हैदराबाद के राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले वनडे में, सलामी बल्लेबाज ने शानदार दोहरा शतक जड़ा। हालांकि, विशाखापट्टनम में इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट की दूसरी पारी में 104 रन पर आउट होने के बाद उन्हें एक बार फिर अपने पिता का गुस्सा झेलना पड़ा।

रैंडी ऑर्टन ने जब मौत को सामने से देखा, फिर ऐसे किया कमबैक, सालों तक बिस्तर पर गुजारा समय

एजेंसी नई दिल्ली

WWE के पूर्व चैंपियन रैंडी ऑर्टन ने हाल ही में स्टेफनी मैकमैहन के व्हाट्स योर स्टोरी पॉडकास्ट पर एक खास बातचीत की। उन्होंने अपनी जिंदगी के सबसे मुश्किल दौर के बारे में खुलकर बात की। रैंडी ने बताया कि स्पाइनल फ्यूजन सर्जरी के बाद WWE से उनकी लंबी अनुपस्थिति के दौरान उन्हें मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कितनी परेशानियां हुईं। उन्होंने अपने संभावित रिटायरमेंट के डर, पैनिक अटैक्स और परिवार पर इसके असर के बारे में भी बताया। रैंडी ने यह भी कहा कि पॉडकास्ट पर अपनी कहानी साझा करना उनके लिए एक तरह का इलाज था और अब वह बेहतर महसूस कर रहे हैं। रैंडी ऑर्टन ने पॉडकास्ट में बताया कि कैसे सर्जरी के बाद उन्हें अपने भविष्य को लेकर अनिश्चितता महसूस हो रही थी। उन्होंने कहा, 'यही मेरी पहचान है। मैं यही हूं... यही एक चीज है जिसमें मैं अच्छा हूं और जिसके लिए मुझे

सम्मान मिलता है और मैं अब यह नहीं कर सकता। लगभग छह महीने तक मुझे यही लग रहा था कि सब खत्म हो गया है... मैं एक अंधेरी जगह पर चला गया था।' इसका मतलब है कि रैंडी को लग रहा था कि उनका करियर खत्म हो गया है और वह बहुत निराश हो गए थे। उन्होंने आगे बताया कि उन्हें पैनिक अटैक्स और एंग्जायटी भी होने लगी थी। रैंडी ने कहा, 'हवाई जहाज में उड़ना मुश्किल हो गया था। किसी और के बिस्तर पर सोना मुश्किल हो गया था और मैं पूरी रात जागा रहता था... रात को सोने की कोशिश करता था और बिस्तर पर लेट नहीं पाता था, क्योंकि मेरा दिमाग चलना शुरू हो जाता था और फिर अचानक मुझे गर्मी लगने लगती थी और मुझे बिस्तर से उठना पड़ता था... मैं अपने यार्ड में घूमता रहता था, बस गहरी सांसें लेता रहता था।' इसका मतलब है कि रैंडी को बहुत घबराहट होती थी और वह रात भर सो नहीं पाते थे। हालांकि, रैंडी ने कहा कि अब वह मानसिक रूप से बेहतर महसूस कर रहे हैं। उन्होंने माना कि पॉडकास्ट के दौरान अपने अनुभव के बारे में बात करना उनके लिए एक तरह का इलाज था। रैंडी ने कहा, 'अब मैं एक अच्छी जगह पर हूं।' उन्होंने यह भी कहा कि अपनी परेशानियों के बारे में खुलकर बात करना 'थेरेपी जैसा लगता है।' इसका मतलब है कि रैंडी को अपनी कहानी साझा करने से बहुत मदद मिली और अब वह पहले से ज्यादा खुश हैं।

व्यापार

अमेरिका के खिलाफ भारत का यह कैसा प्रस्ताव, 9 जुलाई की डेडलाइन से पहले इस एक्शन का क्या है मतलब

एजेंसी नई दिल्ली

भारत ने अमेरिका के खिलाफ जवाबी टैरिफ लगाने का प्रस्ताव रखा है। यह प्रस्ताव विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के नियमों के तहत है। अमेरिका ने ऑटोमोबाइल सेक्टर पर सुरक्षा के नाम पर टैरिफ लगाए थे। इसके जवाब में भारत ने यह कदम उठाया है। भारत अमेरिका के कुछ खास उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाएगा। इससे अमेरिका से आने वाले सामान महंगे हो जाएंगे। यह एक तरह का 'जैसे को तैसा' वाला कदम है। अमेरिका ने अपने घरेलू ऑटोमोबाइल (और स्टील / एल्यूमीनियम) उद्योग को बचाने के लिए भारत सहित कुछ देशों से आयात होने वाले सामानों पर 'सुरक्षा शुल्क' (सेफगार्ड टैरिफ) लगाए थे। इन शुल्कों से भारत के निर्यात पर नकारात्मक असर पड़ा है। इसके जवाब में भारत ने भी यह तय किया है कि वह अमेरिका से आने वाले कुछ विशेष उत्पादों पर टैरिफ (आयात शुल्क) बढ़ाएगा। जब किसी सामान पर टैरिफ बढ़ाया जाता है तो वह आयातित सामान महंगा हो जाता है। इससे घरेलू बाजार में उसकी मांग कम हो जाती है। भारत ने डब्ल्यूटीओ को इस बारे में जानकारी दी है। भारत ने बताया कि अमेरिका ने जो शुल्क लगाए हैं, वे नियमों के अनुसार नहीं हैं। इसलिए भारत को भी जवाबी

कार्रवाई करने का अधिकार है। डब्ल्यूटीओ में भारत की तरफ से एक सूचना जारी की गई है। इसके अनुसार, 'रियायतों या अन्य दायित्वों के प्रस्तावित निलंबन का रूप अमेरिका में उत्पादित चुनिंदा उत्पादों पर शुल्क में बढ़ोतरी के रूप में होगा।' इसका मतलब है कि भारत अमेरिका के कुछ चुने हुए उत्पादों पर टैक्स बढ़ाएगा। भारत ने डब्ल्यूटीओ के माल व्यापार परिषद को यह सूचना दी है। इसमें बताया गया है कि भारत कुछ नियमों के तहत अपनी रियायतों को रोकने का प्रस्ताव रखता है। यह कदम इसलिए उठाया जा रहा है क्योंकि अमेरिका ने भारत से आने वाले वाहन के सामान पर टैरिफ बढ़ा दिया है। अमेरिका ने इस साल 26 मार्च को एक फैसला लिया था। इसके तहत यात्री वाहन, हल्के ट्रक और भारत से आने वाले कुछ वाहन के सामान पर 25 फीसदी शुल्क बढ़ा दिया गया। यह नियम 3 मई, 2025 से लागू है और हमेशा के लिए जारी रहेगा। अमेरिका ने इन उपायों के बारे में डब्ल्यूटीओ को नहीं बताया है। लेकिन, ये मुख्य रूप से सुरक्षा उपाय हैं। भारत का कहना है कि अमेरिका के ये उपाय गैट (व्यापार और शुल्क पर सामान्य समझौता) 1994 और सुरक्षा उपायों पर समझौते के नियमों का पालन नहीं करते हैं। भारत ने कहा कि अमेरिका ने शुल्क लगाने से पहले भारत से सलाह नहीं ली। इसलिए भारत को भी रियायतों को रोकने का अधिकार है। इसका मतलब है कि भारत अमेरिका के सामान पर टैक्स बढ़ाकर अपना विरोध जता सकता है। बयान में कहा गया है, 'चूंकि इन शुल्क पर भारत से परामर्श नहीं हुआ है, इसलिए देश रियायतों या अन्य दायित्वों को निलंबित करने का अधिकार सुरक्षित रखता है।' यानी, भारत को यह अधिकार है कि वह अमेरिका के साथ व्यापार में कुछ छूट को रोक दे। यह कदम अमेरिका के शुल्क के जवाब में उठाया गया है। भारत इस कदम से अपने व्यापारिक हितों की रक्षा करना चाहता है। जब अमेरिका भारतीय उत्पादों पर शुल्क लगाता है तो वे अमेरिका में महंगे हो जाते हैं और उनकी प्रतिस्पर्धात्मकता कम हो जाती है। जवाबी शुल्क लगाकर भारत भी अमेरिका पर दबाव डालना चाहता है कि वह अपने शुल्कों को हटाए।

माइक्रोसॉफ्ट ने पाकिस्तान से अचानक बोरिया-बिस्तर समेटा, रोना-धोना शुरू, क्या भारत से पंगा लेना पड़ा महंगा

एजेंसी नई दिल्ली

पाकिस्तान में माइक्रोसॉफ्ट का कामकाज 25 साल बाद बंद हो गया है। 2000 में इस कंपनी को पाकिस्तान लाने वाले सीईओ के अनुसार, माइक्रोसॉफ्ट ने यह फैसला लिया है। राजनीतिक और आर्थिक अस्थिरता के कारण कंपनी को यह कदम उठाना पड़ा। इससे पाकिस्तान के तकनीकी क्षेत्र को बड़ा झटका लगा है। पाकिस्तार के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. आरिफ अल्वी ने भी इस पर चिंता जताई है। माइक्रोसॉफ्ट ने 7 मार्च, 2000 को पाकिस्तान में काम करना शुरू किया था। कंपनी ने बिना किसी औपचारिक घोषणा के अपना कामकाज बंद कर दिया। माइक्रोसॉफ्ट के पहले कंट्री हेड जव्वाद रहमान ने कहा, 'आज मुझे पता चला कि माइक्रोसॉफ्ट ने आधिकारिक तौर पर पाकिस्तान में अपना कामकाज बंद कर दिया है। बचे हुए कर्मचारियों को भी बता दिया गया है। इस तरह एक युग का अंत हो गया।' माइक्रोसॉफ्ट ने अभी तक कोई आधिकारिक कारण नहीं बताया है। लेकिन, माना जा रहा है कि पाकिस्तान की खराब अर्थव्यवस्था, राजनीतिक अस्थिरता और व्यापार की मुश्किल परिस्थितियों के कारण यह फैसला लिया गया है। बार-बार सरकारें बदलने, ज्यादा टैक्स लगने, रुपये की कीमत में गिरावट

और टेक्नोलॉजी के आयात में दिक्कतों के कारण मल्टीनेशनल कंपनियों के लिए यहां काम करना मुश्किल हो गया है। वित्त वर्ष 2023-24 में पाकिस्तान का व्यापार घाटा 24.4 अरब डॉलर तक पहुंच गया। जून 2025 तक विदेशी मुद्रा भंडार घटकर सिर्फ 11.5 अरब डॉलर रह गया। इसका सीधा असर टेक्नोलॉजी के आयात और निवेशकों के भरोसे पर पड़ा। पाकिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. आरिफ अल्वी ने भी इस बारे में बात की। उन्होंने कहा कि राजनीतिक अस्थिरता के कारण अवसर खोने से यह स्थिति आई है। उन्होंने कहा, 'पाकिस्तान में माइक्रोसॉफ्ट का कामकाज बंद होना हमारी अर्थव्यवस्था के लिए चिंताजनक संकेत है। मुझे फरवरी 2022 का वह दिन याद है, जब बिल गेट्स मेरे ऑफिस आए थे। मैंने पाकिस्तान के लोगों की तरफ से उन्हें पोलियो खत्म करने में मदद करने के लिए हिलाल-ए-इम्तियाज से सम्मानित किया था।' डॉ. अल्वी ने आगे कहा, 'जब हम मेरे ऑफिस के बाहर लॉन में बैठे थे तो हमने AI, क्वांटम कंप्यूटिंग, गट माइक्रोबायोम और लंबी उम्र जैसे कई विषयों पर बात की। मैंने उनसे सीधे पूछा, 'माइक्रोसॉफ्ट पाकिस्तान में निवेश क्यों नहीं कर रहा है?' अल्वी ने बताया कि उन्होंने तत्कालीन पीएम इमरान खान से बात की और माइक्रोसॉफ्ट के सीईओ सत्या नडेला से बातचीत भी तय कराई।' यह और बात है कि उसके बाद सब कुछ बदल गया। सरकार बदलने से निवेश की योजना अधर में लटक गई। अक्टूबर 2022 में माइक्रोसॉफ्ट ने वियतनाम में विस्तार करने का फैसला किया। पहले पाकिस्तान को प्राथमिकता दी जा रही थी। लेकिन, यह मौका हाथ से निकल गया। पाकिस्तान अब अनिश्चितता के दौर से गुजर रहा है। बेरोजगारी बढ़ रही है, लोग विदेश जा रहे हैं, खरीदने की क्षमता कम हो गई है और आर्थिक सुधार एक सपने जैसा लग रहा है। अल्वी ने कहा, 'आवामी संदर्भ में आर्थिक सुधार एक दूर का और मायावी सपना लगता है।' माइक्रोसॉफ्ट ने पाकिस्तान के डिजिटल विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कंपनी ने गांवों के स्कूलों में कंप्यूटर लैब शुरू किए, छोटे व्यवसायों को डिजिटल बनाने में मदद की और शिक्षण संस्थानों के साथ काम किया।

LIC ने शुरू की हैं ये दो स्कीमें, खास बातें जान लीजिए, पहली वाली में आपको...

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) ने दो नई स्कीमें शुरू की हैं। इनमें से एक एलआईसी की नव जीवन श्री (प्लान 912) और दूसरी एलआईसी की नव जीवन श्री सिंगल प्रीमियम (प्लान 911) है। एलआईसी के सीईओ और एमडी (इन-चार्ज) सत पाल भानु ने शुक्रवार को इन स्कीमों को लॉन्च किया। ये दोनों स्कीमें विशेष रूप से बचत और जीवन बीमा के कॉम्बिनेशन के रूप में डिजाइन की गई हैं। इनका मुख्य मकसद लोगों की अलग-अलग जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त फंड बनाना है। एलआईसी का नव जीवन श्री (प्लान 912) विशेष रूप से युवाओं की आकांक्षाओं को पूरा करने पर केंद्रित है। यह स्कीम उस युवा पीढ़ी के लिए बनाई गई है जो अपने सपनों, लक्ष्यों और जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहती है। यह उन्हें वित्तीय सुरक्षा प्रदान करते हुए निश्चित अवधि में महत्वपूर्ण फंड जुटाने में मदद करती है। इसका मतलब है कि यह प्लान न केवल आपके भविष्य के लक्ष्यों के लिए बचत करने का अवसर देता है, बल्कि अप्रत्याशित परिस्थितियों में आपके परिवार को सुरक्षा भी प्रदान करता है। दूसरी ओर, एलआईसी का नव जीवन श्री सिंगल प्रीमियम (प्लान 911) उन लोगों के लिए है जो एकमुश्त निवेश के जरिये बड़ा फंड बनाना चाहते हैं। इस योजना में आपको केवल एक बार प्रीमियम का भुगतान करना होता है। इसके बाद यह आपको एक निश्चित अवधि के लिए जीवन बीमा कवर प्रदान करती है। यह प्लान उन लोगों के लिए सही है जिनके पास एकमुश्त बड़ी राशि है और वे इसे सुरक्षित तरीके से निवेश करके भविष्य के लिए एक फंड बनाना चाहते हैं। साथ ही अपने परिवार की वित्तीय सुरक्षा भी सुनिश्चित करने को इच्छुक हैं। कुल मिलाकर एलआईसी की ये दोनों नई स्कीमें लोगों को उनकी जिंदगी की तमाम वित्तीय जरूरतों जैसे शिक्षा, शादी, घर खरीदना या रिटायरमेंट आदि के लिए बचत करने का अवसर देती हैं। यही नहीं, ये लोगों को जीवन बीमा के जरिये सुरक्षा भी प्रदान करती हैं। ये योजनाएं एलआईसी के ग्राहकों को अपने वित्तीय भविष्य को सुरक्षित और मजबूत बनाने के लिए अतिरिक्त विकल्प प्रदान करती हैं।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा